INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Pesticide Consumption on Agriculture in Maharashtra State: A Special References to Ahmednagar District	Mr. Amol Shinde & Dr.T.N. Lokhande	05
2	An Analysis of Performance and Impact of MUDRA Yojna (PMMY)	Anjali Vij	11
3	Agricultural Origin and Development in Ancient India in Historical Retrospect : A Study	Anurag Borah	20
4	Gandhiji's Non-Violence Concept and the Way Out for World Peace	Dr. Kantrao Pole	24
5	A Case Study of Ecotourism Potential in Saputara Hill Station	Dr. Gautam Kolte	27
6	Dalit World View and Philosophy in India	Dr. Panchappa Waghmare	32
7	The Performance of Political Parties in 16th and 17th Lok Sabha Elections in Punjab : A comparative analysis	Sandeep Kullar	36
8	Marital Disharmony in the Selected Novels of Anita Desai	Anil Londhe	43
9	Feminism in A Dalit Autobiograpy : A Study of Viramma : Life of an Untouchable	Roshankumar More	49
10	An Analytical Study of Continuity in Training Programme of Power and Flexibility on Players	Dr. Rahul Rode	52
11	The Study of Relationship between Employee Morale and Productivity	Dr. Pratibha Siriya	55
12	Spatio-Temporal Changes in Proportion of Cultivators and Agricultural Labourers in Jalgaon District (MS)	Arvind Badgujar	60
13	Understanding Impact of GST on MSMES : An Analysis after Two Years of the Tax Reform	Aditya Sharma	67
14	Effect of Yoga Practice on Motor Function among Children with Hearing Impairment	Dr. Arvind Joshi	73
15	A Plight of Kolhati Women in Kishor Shantabai Kale's Against All Odds	Mr. Jaysing Babar	77
16	Latex Allergy and Prevention	Dr Kanupriya Gupta	81
17	Role of Tutorial Strategy in Teacher Education Institutions	Dr. B. J. Mundhe	90
18	Rural Development - A Case Study of Dairy Farmers in Shevgaon Tehsil	Kakasaheb Lande & Dr. Haridas Pisal	93
19	Sighting the '*Out- Of- Sight*' in the Globalizing India: A Study of the '*Slumdog Millionaire*	Dr. Suvarna Shinde	96
20	Drip Irrigation Technology in Agriculture Sector : A Special References to Ahmednagar District	Mr. Amol Shinde & Dr.T.N. Lokhande	101
21	समकालीन हिंदी कहानी : भाषा का बदलता स्वरूप	डॉ. शैलजा	108
22	अमरकांत के उपन्यासो में स्त्री संघर्ष	आर. देवकी	115
23	जनजातीय समाज में महिलाओ की स्थिती	शैलेन्द्र कुमार सिंह	121
24	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में व्यक्त हास्य–व्यंग्य	डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	125
25	भारतीय साहित्य में चित्रित नारी	डॉ. सौ.सुरैय्या शेख	127
26	तेलियागढी : गेटवे ऑफ बंगाल	शैलेन्द्र कुमार सिंह	130
27	अमरकांत के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना	आर.देवकी	134
28	लघु और कुटीर उद्योगोंकी स्थिति में सुधार	डॉ.रमेश जोशी	139
29	राष्ट्रभाषा हिंदी की उपयोगिता	डॉ.बळीराम धापसे	143

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Vol. 6, Issue 2
UGC Approved Journal
E-ISSN : 2348-7143
April-May-June 2019

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में व्यक्त हास्य - व्यंग्य

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
मो. ०९४०४६४६७६८
महाविद्यालय, गेवराई
ता.गेवराई जि.बीड
मो. ०९४०४६४६७६८
अनुप्रेष : santoshyashwantkar@gmail.com

'महाप्राण' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी को छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ या छायावाद का चतुष्टय कवि के रुप में जाना जाता है। वास्तव में किसी भी रचनाकार को वाद विशेष या किसी विशिष्ट विचारधारा में बांधना याने उस रचनाकार के विचारों को सीमित करना है किंतु किसी रचनाकार को वाद विशेष या विशिष्ट विचारधारा में बांधने का मतलब यह तो नहीं कि, वह रचनाकार उस विशिष्ट विचारधारा या वादतक सीमित है। किसी भी रचनाकार को किसी विशिष्ट वाद या विचारधारा के अंतर्गत लिया जाता है, तो उसका मतलब है कि वह रचनाकार उस वाद या विशिष्ट काव्यधारा में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त वह अन्य वाद या विचारधारा में अपना योगदान नहीं दे सकता ऐसा नहीं। ऐसे ही कवि महाप्राण निराला जी है। जिन्होंने न केवल छायावादी काव्यधारा में अपना योगदान दिया बल्कि प्रगतिवादी काव्यधारा को सशक्त बनाने में भी उनका योगदान अविस्मरणीय है।

निराला के काव्य में प्रगतिवादी स्वर छायावादोत्तर रचना में दिखाई देता है। उनके काव्य में व्यक्त प्रगतिवादी स्वर न केवल समाज तक ही सीमित है बल्कि साहित्यिक क्षेत्र में भी दृष्टिगोचर होता है। कहने का आशय यह है कि निराला के काव्य में वे सभी तत्व पाये जाते है जो एक प्रगतिवादी कवि में होने चाहिए। निराला जी ने समाज और साहित्य की रुढ़ियों का सबसे प्रबल विरोध किया। उन्होंने ही सबसे पहले कविता को छंद के बंधनों से मुक्त कर खुली भूमि पर लाकर खड़ा किया। उनकी प्रतिभा के कारण ही छायावादी काव्य परंपरागत काव्य रुढ़ियों के चुंगुल से मुक्त हो सका।

निराला जी स्वभावतः क्रान्तिकारी थे, इसीलिए वे पुरातन और रुढ़िग्रस्त मार्ग के कट्टर शत्रू थे। निराला जी साहित्य और समाज में विद्रोह की भावना को लेकर अवतरित हुए। प्राचीन रुढ़ियों से इन्हें न तो लगावा था न ही उनके प्रति कुछ आस्था थी। भाषा के विषय में थी इन्होंने विद्रोहात्मक प्रवृत्ति से काम लिया। कोमलकांत भाषा को ओज और भारस्वरता प्रदान करने का कार्य निराला जी ने किया। भावों की सहज एवं पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए व्याकरण के बंधन तोड़ दिये गये। छंदों की पायले उतार दी गई। नए शब्द गढ़े तथा अपनाये गये। शब्दों को भाव और स्वर-लय की तान पर चढ़ाकर कसा गया और घिसा भी गया। कहीं-कहीं स्वर मात्र में घटाव-बढ़ाव भी लाया गया। जैसे-

"अबे सुन बे, गुलाब / भूल मत जो पायी खूसबू रंगों आब / खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट.../ रोज पड़ता रहा पानी / तू हरामी खानदानी।"[१]

इन पंक्तियों में स्पष्ट ही है कि, यह पंक्तियाँ छंद की परंपरागत बंधनों से मुक्त है। इसमें कोमलकांत भाषा के स्थान पर ओज एवं भारस्वता है। जैसे- अबे सुन बे, हरामी खानदानी आदि शब्दों में जा भाव उमड़ पड़े है वह भारस्वता से प्रदान है इसीलिए कुमुद शर्मा जी लिखते है कि- "निराला ऐसे युग प्रेरक हिंदी निर्माता थे जो हिंदी को नया, ठोस और समर्थ धरातल ठोसकर मृत्यूंजय, अपराजयी, महाप्राण और विश्वकवि कहलाये।"[२]

'महाप्राण' निराला जी के 'जागो फिर एक बार' 'कुकुरमुत्ता', 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक' आदि कविताओं में उनका प्रगतिवादी स्वर उभरकर आया है। सौंदर्य के प्रति इनका दृष्टिकोण प्रगतिवादी रहा है। यह उस सौंदर्य के उपासक

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist. Beed

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Vol. 6, Issue 2
UGC Approved Journal
E-ISSN : 2348-7143
April-May-June 2019

है जो साहित्य में इससे पहले उपेक्षित था। वे नारी के नख-शिख सौंदर्य को चित्रित करने में अपना समय नहीं डालते बल्कि बाहरी सौंदर्य की अपेक्षा कर्म सौंदर्य को अधिक महत्व देते है।

निराला जी ने सौंदर्य के पारंपारिक दृष्टिकोण में बदलाव लाया यहीं नहीं तो उसे नये रुप में ढाला इस संदर्भ में ड़ा. हणमंत पाटील जी ने ठीक ही लिखा है कि, "नये साहित्य के सौंदर्य में पहला चरण रखने का कार्य निराला ने किया है।"[३] अर्थात निराला जी बाह्यसौंदर्य की अपेक्षा आंतरिक सौंदर्य पर अधिक महत्व देते है। उन्होंने पहली बार पत्थर तोड़नेवाली औरत के सौंदर्य को रुपायित किया है। जैसे-

"वह तोड़ती तत्थर / कोई न छायादार / पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार / श्याम तन भार बंधा यौवन / नत नयन, प्रिय कर्मरत मन / गुरु हथोंड़ा हाथ / करती बार-बार प्रहार।"[४]

निराला जी रुढ़ि विरोधी एवं क्रान्तिकारी कवि होने के नाते उन्होंने परंपरागत रुढ़ियों का जो की समाज प्रगति के बाधक और क्रुर मानवीय है ऐसे रुढ़ियों का विरोध उनकी कविता में सर्वत्र विद्यमान है। जैसे की 'सरोज स्मृति' कविता में लिखते है। जैसे-

"फिर सोचा मेरे पूर्वज गण / गुजरे जिस राह वहीं शोभन / कुछ मुझे तोड़े गत विचार / पर पूर्ण रुप प्राचीन भार / ढोते मैं हूँ अक्षम।"[५]

निराला जी रुढ़ियों के विरोधी ऐसे कवि है जो मानव को सुखी बनाने के लिए प्रगतिशील चेतना को वहन करने में विश्वास रखते है। 'जागो फिर एक बार' कविता में वे भारतवासीयों को उनकी महत्ता एवं गरिमा का स्मरण दिलाते हुए लिखते है कि-

"तुम हो महान तुम सदा हो महान / है नश्वर यह दीन भाव / कायरता, कामपरता / ब्रह्म हो तुम / पद रज भी नहीं पूरा यह विश्व भार / जागो फिर एक बार।"[६]

निराला जी ने अपनी कविताओं में नारी के प्रति जो परंपरागत दृष्टिकोण था उसे काव्य के माध्यम से परिवर्तित करने का काम किया है। उनकी 'विधवा', भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर', आदि अनेक कविताओं के माध्यम से नारी बंधन तोड़ने की बात की है। कुल मिलाकर यहीं कहा जा सकता है कि, महाप्राण निराला जी के काव्य में प्रगतिवादी स्वर न केवल सामाजिक क्षेत्र तक सीमित है बल्कि साहित्यिक क्षेत्र में भी उनका प्रगतिवादी स्वर दृष्टिकोन होते है।

संदर्भ सूची :

१. नये पत्ते - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', पृ.सं.७९
२. हिंदी के निर्माता - कुमुद शर्मा, प्रथम संस्करण पृ.सं.२४३
३. नवनिकष - सं.ड़ा.लक्ष्मिकांत पांड़े, पृ.सं.१२
४. अनामिका - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
५. जागो फिर एक बार - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist. Beed.